अघोरानंद और
कमीना प्रेमी
अनिल शेखर "अमस"

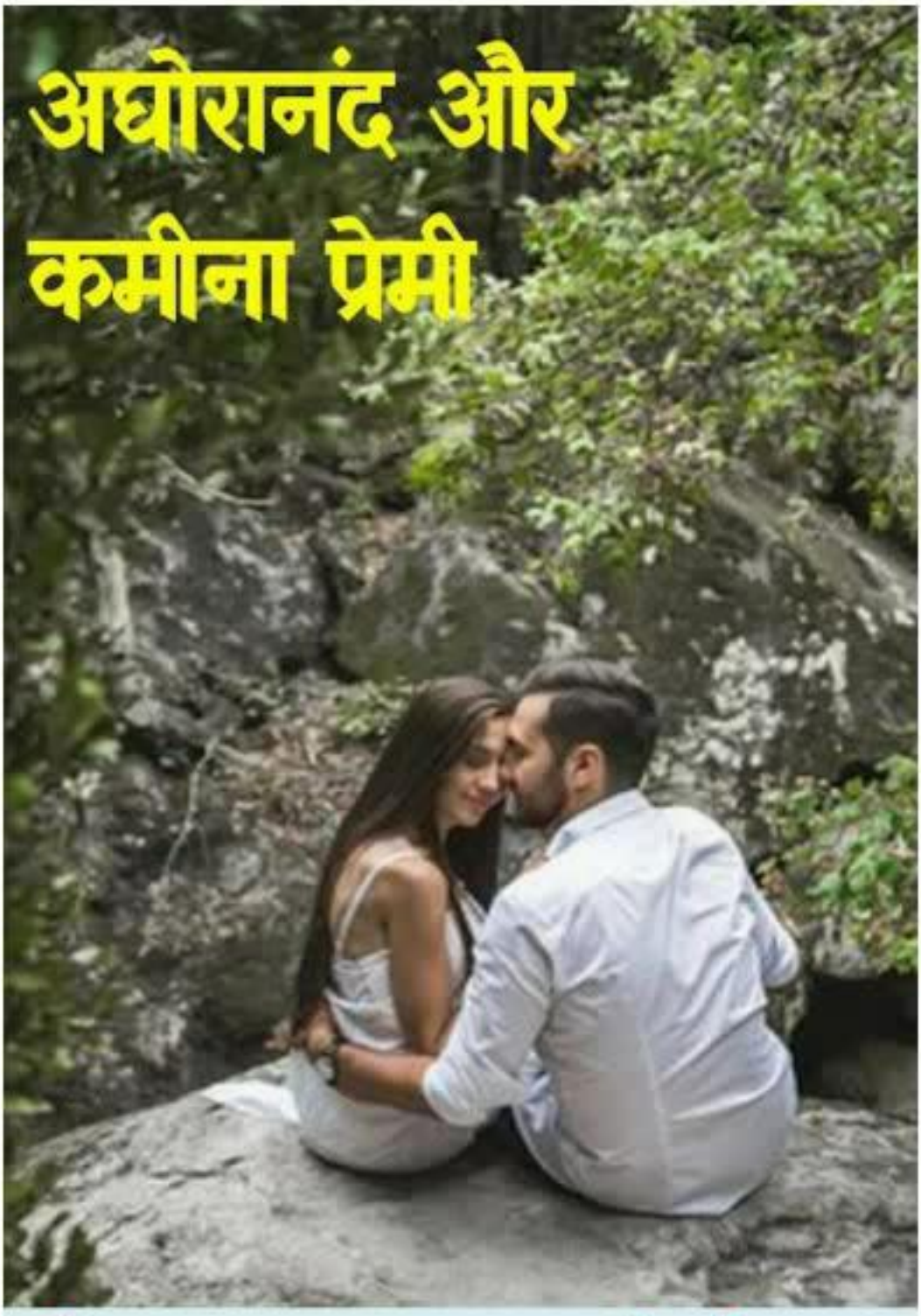

श्री सदगुरु चरण कमलेभ्यो नमः

सभी पाठकों का अभिनन्दन ....

तंत्र साधनाएं विशेष रूप से अघोर साधनाएं और

उनका रहस्यमय संसार मुझे हमेशा आकर्षित करता रहा है । उसी संसार की एक काल्पनिक यात्रा पर आने के लिए आपको आमंत्रित करता हूँ .....

यह यात्रा आपको रोमांचक अवश्य लगेगी .....

इस कथा में सब कुछ मेरी कल्पना है । किसी भी प्रकार के अंधविश्वास से दूर रहें और इसके किसी भाग का अनुकरण करने की कोशिश न करें , क्योंकि कल्पना और वास्तविकता में बहुत फर्क होता है ....

अघोर साधनाओं का अपना एक अलग संसार है । जिसमें किसी प्रकार का नियम या प्रतिबंध, जो समाज में लागू है, वह लागू नहीं होता है । इसलिए कई घटनाएं और कई दृश्य आपको असहज लग सकते हैं लेकिन उससे विचलित

ना हो और कहानी और लेखक की कल्पना का एक भाग समझते हुए कहानी पढ़ें ।अंत में .....

यह कथा मनोरंजन के लिए लिखी गयी एक रचना है उसका आनंद लें ...

अनिल शेखर "अमस"

anilshekhar.amas@gmail.com

अध्याय

अघोरानंद और कमीना प्रेमी

तारापीठ से वापसी

वर्षा की कहानी

प्रेम विवाह

अलगाव

बंगाली बाबा का मायाजाल

दुबारा मुलाक़ात

रमेश की वापसी

अब तक आपने पढ़ा

मैं.....

यानी अघोरानंद , 26 वर्ष का एक युवक, अपनी पत्नी माला की मृत्यु के बाद, गुरु के सानिध्य में अघोर साधना में प्रवृत्त होता है ।

जिसके बाद गुरुदेव मुझे

"अघोरानंद"

नाम देते है ।

मैं समाज को छोड़कर जाने के विषय में सोचता हूं, लेकिन गुरुदेव मुझे गृहस्थ में रहकर समाज के बीच कार्य करने का निर्देश देते हैं ...

जिसके बाद मैं वापस अपनी सरकारी नौकरी करते हुए साधना के पथ पर आगे बढ़ता हूँ ....

इसी क्रम में मुझे पश्चिम बंगाल के तारापीठ में जाकर तारा साधना करने का निर्देश मिलता है.....

जिसके बाद मैं वहां जाकर तारा साधना संपन्न करता हूं । जिसमें मुझे विभिन्न अनुभूतियां होती हैं । तारा पुत्र

बामाखेपा के दिव्य दर्शनों का सौभाग्य मिलता है । इसे आप पढ़ सकते हैं **"अघोरानंद और तारापीठ की छाया मे" ....**

तारापीठ में साधना के क्रम में ही एक युवा तंत्र साधिका छाया मेरे संपर्क में आती है । एक अन्य महिला साधिका रेणु माई मुझे चौसठ योगिनी मंदिर में ले जाकर विभिन्न प्रकार की साधना ओं का रहस्य समझाती है । उसी क्रम में योगिनी साधना भी संपन्न होती है । इसे आप पढ़ सकते हैं **"अघोरानंद और चौसठ योगिनी मंदिर का रहस्य"** मे ...

चौसठ योगिनी साधना संपन्न करके मैं वापस लौटता हूं तो मेरे मकान मालिक तथा गुरुभाई बनर्जी दादा मुझे शाबर मंत्र साधना से संबंधित एक किताब देते हैं । साथ ही मुझे गुरु गोरखनाथ के सानिध्य में उनके दिव्य पीठ में बैठकर कुछ मंत्र जाप करने के लिए निर्देशित करते हैं ।

समय की कमी को देख वे अपनी वायु गमन साधना के द्वारा मुझे गोरख पीठ तक छोड़ते हैं । जहां पर मुझे पूज्य पाद गोरखनाथ जी का आशीर्वाद मिलता है

तथा वापसी में मुझे पता चलता है कि छाया को भी वायु गमन साधना सिद्ध है । इसे आप पढ़ सकते हैं **"अघोरानंद और छाया की माया"** मे ...

छाया मुझे मेरे कमरे से एक रहस्यमय गुफा में ले जाती है । जो एक बड़ी सी पहाड़ की चोटी पर स्थित है । वहां हम दोनों महाश्यामा साधना को संपन्न करते हैं तथा अघोरेश्वर महादेव और महामाया का आशीर्वाद प्राप्त करते हैं ...

अब आगे

तारापीठ से वापसी

उसी दिन रात को मेरी वापसी की ट्रेन थी ।

मैंने बनर्जी दादा और बापी से विदा ली ।

तारा माई के मंदिर जाकर उनके दर्शन किए ।

बाबा प्रचंड नाथ का आशीर्वाद लिया और बस में बैठकर वापसी के लिए निकल गया ...

ट्रेन में मुझे साइड की अपर बर्थ मिली । मैंने सामान नीचे रखकर लॉक किया और ऊपर चढ़कर सो गया ।

साधनात्मक प्रयासों और लगातार इधर उधर आने-जाने के बीच सोने का समय नहीं मिल पाया था । इसलिए गहरी नींद आई और कुछ ही क्षणों में मैं नींद के आगोश में चला गया ...

ट्रेन अपनी रफ्तार से चली जा रही थी ...

उसके हिलने डुलने से ठीक वैसा ही आभास हो रहा था जैसे एक नन्हे शिशु को होता होगा जब उसकी मां उसे अपनी गोद में बैठाकर हिलाती है.....

ट्रेन की वह हल्की-हल्की हिलती-डुलती गति और ठंडी हवा का झोंका दोनों ने मिलकर नींद की गहराई को बढ़ा दिया था .....

उस समय तक मेरे सामने वाली सीट खाली थी अर्थात नीचे की बर्थ खाली थी । जैसा कि आप लोग जानते होंगे साइड में नीचे की बर्थ आमतौर पर आरएसी वाले यात्रियों को दी जाती है । उस पर 2 यात्रियों को बैठकर जाने का अवसर मिलता है ।

मैं गहरी नींद में जा चुका था और अगले दिन सुबह लगभग 12 बजे मेरी नींद खुली ।

वर्षा से मुलाक़ात

धूप चढ़ चुकी थी और गर्म हवाएं चल रही थी । नीचे की बर्थ पर 2 लोग बैठे हुए थे । जिसमें से एक लगभग 60 साल का बुजुर्ग व्यक्ति था । उसके साथ एक युवती थी । जिसकी उम्र तकरीबन 25 साल रही होगी । दोनों को देखकर ऐसा लग रहा था कि उनकी सीट शायद आरएसी में रही होगी । वे जरूर सारी रात जागे थे ।

मेरी नींद पूरी हो चुकी थी इसलिए मैंने अपना बिस्तर समेटा और उनको ऊपर जाकर सो जाने के लिए कहा । दोनों ने एक दूसरे को देखा और युवती ने बुजुर्ग व्यक्ति को सो जाने के लिए कहा ।

बुजुर्ग व्यक्ति भी जैसे इसी सहमति का इंतजार कर रहा था । वह तुरंत ऊपर की बर्थ की ओर लपका । कुछ ही क्षणों में उसके खर्राटों की आवाज गूंजने लगी ।

मैंने अपने बैग से ब्रश टूथपेस्ट वगैरा निकालकर अपना सुबेरे का कार्यक्रम संपन्न किया । लगभग आधे घंटे में वापस अपनी बर्थ पर आया । अपनी बर्थ पर आने के बाद सबसे पहली चीज थी, चाय !

आप भी जानते होंगे कि ट्रेन के अंदर की चाय जैसी घटिया चाय अगर आप ट्रेन से नीचे किसी के हाथों से पिएंगे तो आपकी यह इच्छा जरूर होगी कि उसकी गर्दन दबा दो । लेकिन ट्रेन के अंदर आपको वही चाय पीनी पड़ती है ।

थोड़ी देर में चाय आई |

मैंने उस लड़की से पूछा - चाय पियोगी ?

उसने असहमति में सिर हिलाया । मैंने चाय ली और उसके पैसे देकर चाय पीने लगा । चाय का पहला घूंट जैसे ही अंदर गया..... मुझे अजीब सा अहसास हुआ !

क्योंकि वह चाय बड़ी शानदार थी ! अदरक डली ! बराबर मिठास वाली ! बेहद स्वादिष्ट ! वह चाय इतनी स्वादिष्ट थी कि मुझे अपनी स्वर्गीय पत्नी माला की याद आ गई ! वह भी ऐसी ही चाय बनाकर पिलाती थी । मैंने मजे लेते हुए वह पूरी चाय सुड़क ली ।

चाय खत्म हो चुकी थी लेकिन चाय के स्वाद को देखते हुए उसे पीने की इच्छा खत्म नहीं हुई थी । अभी चाय

वाला बोगी से बाहर नहीं गया था इसलिए मैंने उसे दोबारा से आवाज लगाई । वह फिर से आया । मैंने उसे कहा - गजब की चाय बनाई है भैया ! ट्रेन के अंदर ऐसी चाय मैंने आज तक कभी नहीं पी ! आप एक कप और पिला दो !

उसके चेहरे पर गर्व से भरी हुई मुस्कान दिख रही थी । उसने कहा - मेरी पत्नी ने बनाई है ! जो भी इस चाय को पीता है वह उसकी तारीफ जरूर करता है !

मैंने उसके हाथों को पकड़ा और कहा - भैया ! आप सौभाग्यशाली हैं जो इतनी कुशल पत्नि आपको मिली है । चलिए एक चाय और पिलाइए ।

मेरी तारीफ सुनने के बाद उस युवती का भी शायद चाय पीने का मन हो गया था । उसने भी एक चाय मांग ली और पैसे देने लगी । मैंने भी अपनी चाय के पैसे दिए और हम दोनों चाय की चुस्कियां लेने लगे । चाय वाकई स्वादिष्ट थी और थोड़ी देर में उस युवती के चेहरे पर भी संतुष्टि के भाव दिखाई देने लगे ।

उसने कहा - वाकई चाय बहुत अच्छी है ।

मैंने सहमति में सिर हिलाया तभी मेरी नजर उसकी आंखों पर पड़ी । उसकी आंखें बिल्कुल लाल थी । ऐसा लग रहा था जैसे सारी रात वह जागी हो । थोड़ा और गौर से देखने पर मुझे लगा कि यह लाली केवल जागने की वजह से नहीं थी ! उसकी आंखें फूली हुई भी थी । ऐसा तब होता है जब आप बहुत लंबे समय तक रोते रहे हो । संभवतः वह सारी रात जागती भी रही और रोती भी रही । जिसकी वजह से उसकी आंखें लाल होकर फूल गई थी । कुछ देर में बातों का सिलसिला चल निकला ।

मैंने पूछा -आप कहां जा रही हैं ?

उसने बताया - रायपुर !

मैंने कहा - मैं दुर्ग ।

दुर्ग रायपुर से 40 किलोमीटर है । आसपास के लोग जब मिलते हैं तो अनजान में भी थोड़ी सी आत्मीयता आ जाती है । जब उसे पता चला कि उसके शहर के पास वाली शहर में रहता हूं तो वह भी धीरे-धीरे खुल गई ।

मैंने बताया - मैं सरकारी नौकरी में हूं और कोलकाता तारापीठ गया था ।

उसने अपना नाम वर्षा बताया । वह किसी स्कूल में प्राइमरी सेक्शन में पढ़ाती थी ।

उसकी आंखों की नमी अभी सुखी नहीं थी । उसके चेहरे के भाव बता रहे थे कि उसके अंदर कोई बहुत बड़ी पीड़ा छुपी हुई है ।

तंत्र साधक होने के साथ यह एक बहुत बड़ी दिक्कत है कि आप अपने आसपास बैठे हुए लोगों के भावों को ! उसके अंदर के विचारों को ! उसके अंदर की पीड़ा को ! महसूस करने लग जाते हैं ...

वह पीड़ा ! वह दुख ! आपको बहुत गहरे तक विचलित कर देता है ! जिसे नियंत्रित करना और तटस्थ रहना बहुत मुश्किल होता है !

मैं भी उसकी पीड़ा को उसकी पीड़ा की गहराई को बहुत अच्छे से महसूस कर पा रहा था । आप समझ सकते हैं

कि उसकी पीड़ा की गहराई कितनी ज्यादा रही होगी कि मेरी आंखें नम हो जा रही थी ।

अब अगर वह एक पुरुष होता तो मैं शायद उससे पूछ भी लेता । लेकिन एक युवती होने के नाते उसकी मर्यादा का उल्लंघन करना मुझे ठीक नहीं लगा । धीरे-धीरे बातें चलती रही और दोपहर का खाना भी आ गया । बुजुर्ग आदमी ने खाने से इंकार कर दिया तो हम दोनों ने दो थालीयां लीं और खाना खाने बैठ गए ।

खाना खाने के बाद जैसा कि आप जानते हैं आंखें धीरे धीरे मूंदने लगती है और नींद आने लगती है । मेरी भी स्थिति कुछ-कुछ वैसी ही थी । उस लड़की की स्थिति मुझसे ज्यादा खराब थी क्योंकि रात को भी नहीं सोई थी । बुजुर्गवार खर्राटे मार रहे थे और उनका नीचे उतरने का कोई इरादा नहीं था ।

मैंने उससे कहा - आप भी लेट जाओ अभी तो मैं जगा हुआ हूं ।

कुछ संकोच करने के बाद उसने अपने पांव फैलाये और लेट गई । मैं भी सीट में टिक कर थोड़ा साइड होकर

बैठा हुआ था । कुछ ही देर में वह भी गहरी नींद में चली गई क्योंकि सारी रात जागने की वजह से उसे भी भरपूर नींद आ रही थी । मुझे भी नींद लग गई । जब मेरी आंखें खुली शाम के 5 बज चुके थे । सूरज की किरणें धीरे धीरे मन्द होती जा रही थी और उसी अनुपात में प्रकाश का सानिध्य भी हमसे दूर होता जा रहा था ।

प्रकृति का सौंदर्य

ट्रेन अपनी रफ्तार में आगे की ओर चली जा रही थी । खेतों के बीच से प्रकृति के सुंदर परिवेश से होकर गुजर रही थी । जैसा की आप जानते हैं प्रकृति का सानिध्य मुझे हमेशा से बेहद प्रिय रहा है । मेरा मानना है कि हम जितना ज्यादा प्रकृति के करीब रहते हैं ! जितना ज्यादा प्रकृति के सौंदर्य को निहार पाते हैं ! पेड़ पौधे फूल पत्तियों के सौंदर्य को महसूस कर पाते हैं ! पहाड़ियों का रस समझ पाते हैं ! नदी नाले जैसी जल स्त्रोतों के पास बैठकर उसके नाद को सुन पाते हैं ! झरनों का संगीत समझ पाते हैं ! उतना ही ज्यादा अंदर से स्वतंत्र ! उन्मुक्त और आनंद से युक्त हो जाते हैं ।

इन सारी चीजों की कोई कीमत नहीं है ! यह अमूल्य हैं ! लेकिन ! मुफ्त में उपलब्ध हैं !

केवल हमको उस एहसास को समझना होता है ! उस सौंदर्य को देखने की दृष्टि विकसित करनी होती है ! उसके रस को पीने का ! उसके स्वाद के आस्वादन का ! उसके आनंद को लेने का ! तरीका समझना पड़ता है ।

छह बजे के आसपास वर्षा की भी नींद खुल गई । फिर हम लोग बातें करने लगे । उसने मुझसे मेरे परिवार के बारे में पूछा । मैंने उसे बताया कि मैं अनाथ हूं और मेरी पत्नी अब इस संसार में नहीं है । दर्द उस समय मेरी आंखों में भी छलक आया ।

दर्द का रिश्ता भी बड़ा अजीब होता है । एक दुखी आदमी दूसरे दुखी आदमी के साथ अपना दुख बांट लेता है ।

शायद वही वर्षा के साथ भी हुआ .....

दूर-दूर तक पहाड़ियां दिखाई दे रही थी !
उसके इर्द-गिर्द खूबसूरत जंगल !

जहां तक मैं अपनी बात कहूं । मुझे ऐसा लगता है कि तंत्र साधना क्षेत्र में प्रवेश करने के बाद जैसे जैसे मैंने साधनाएं की ! जैसे जैसे मैंने महामाया का सानिध्य प्राप्त किया ! जैसे-जैसे प्रकृति के रहस्यों से मैं जुड़ता गया ! मेरे अंदर प्रकृति के प्रति प्रेम ! प्रकृति के प्रति आकर्षण !! प्रकृति के साथ जुड़ने का भाव !!! बढ़ता चला गया .....

सनातन धर्म की यह विशेषता रही है कि जब भी कोई आध्यात्मिक प्रसंग रहा हो ! चाहे वह गुरुकुल हो ! चाहे वह साधना स्थली हो !! चाहे वह शक्तिपीठ हो !! वह सारे के सारे प्रकृति के सौंदर्य से भरे हुए ! प्रकृति के गहन ! गंभीर ! शांतिपूर्ण ! वातावरण के अंदर स्थित है । उनकी प्रकृति के साथ यही संलग्नता ! प्रकृति के साथ का यही साहचर्य !! प्रकृति के अंदर स्थित होने की यही विशेषता !!! उनके अंदर एक अद्भुत शक्ति ! अद्भुत तेजस्विता ! एक अद्भुत शांति का आभास पैदा करती है !!!

जिसे अगर आप महसूस करना चाहे तो ! बिल्कुल अकेले ! कभी आप किसी नदी के किनारे ऐसी जगह पर बैठे ! जहां गाड़ियों का आना जाना नहीं होता हो ! सिर्फ आप हो ! नदी की धारा हो ! आप अकेले बैठे हो .....

कभी आप कोशिश करिए ! किसी जंगल के अंदर ! किसी सुनसान जगह पर ! या किसी पहाड़ी के ऊपर एकांत में ! कुछ देर आप अकेले बैठे ! और महसूस कीजिए उस शांति को ...उस विराने को ..... प्रकृति

के उस स्वरूप को ! और आपको बेहद सुखद अनुभूति होगी ।

मैं जानता हूं कि यह सारी चीजें आसानी से उपलब्ध नहीं है । इसलिए बहुत सारे मेरे पाठक इस आनंद को अनुभव नहीं कर पाएंगे । लेकिन उसका भी एक तरीका है .... आप अपने घर में ही बैठ जाएं ...
एकांत कमरे में .... निशब्द ...

कोई आवाज ना हो ...

कोई म्यूजिक ना हो ....

कोई भी ना हो ....

घर का कोई दूसरा सदस्य भी ना हो ...
और आप 10 मिनट 15 मिनट उस वातावरण में बैठे .....
अपने अंदर उतरने का प्रयास करें ! एकदम शांत होकर बैठे ! और ऐसा ही आप 10 - 15 दिन करें ।
उसके बाद ....

आप उस शांति को !

उस सौंदर्य को .....

उस आनंद को .....

प्राप्त करने की ओर अग्रसर होने लगेंगे ! जो कि वास्तव में साधनाओं का मूल है !
जो वास्तविक अध्यात्म है !
जो वास्तविक ध्यान है !
जो वास्तविक स्वरूप को पहचानने की दिशा में उठाया गया पहला कदम है ! कभी अगर आपको मन करे तो इसे अनुभव करने की कोशिश जरूर करिएगा...

वर्षा की कहानी

खैर.....

मैं कह रहा था कि दर्द का रिश्ता बड़ा अजीब होता है । दर्द से दर्द का एहसास करीब होता जाता है । अपनी बात बताते बताते मेरी आंखों से नमी छलकने लगी थी । जिसे देखकर उसे भी अपनी दास्तान सुनाने की शायद इच्छा हो आई ।

उसने कशमकश के साथ बताना चालू किया - मैं समझ नहीं पा रही हूं कि मुझे यह सब आपसे शेयर करना चाहिए या नहीं ? लेकिन बोलने से शायद मेरी भी पीड़ा थोड़ी कम हो जाए ।

मैंने उसे आश्वस्त किया - आप निश्चिंत रहें ! आप मुझसे जो भी बात कहेंगे वह पूरी तरह से गोपनीय ही रहेगी !

मेरा ऐसा कहना शायद उसे थोड़ा और आश्वस्त कर गया । उसने अपनी कहानी बतानी चालू की ।

वर्षा के माता-पिता छत्तीसगढ़ के एक गांव बेतई में रहते थे । गांव का सामाजिक ढांचा बड़ा जटिल और कठोर होता है । एक जाति के लोग दूसरी जाति के लोगों के साथ वैवाहिक संबंध नहीं बनाते हैं । यदि ऐसा होता है तो उसे सामाजिक व्यवस्था को तोड़ने का अपराध माना जाता है ।

वर्षा के माता-पिता दो अलग-अलग संप्रदायों से आते थे । उन दोनों ने प्रेम विवाह किया था । जिसे न तो वर्षा के पिता के परिवार वालों ने स्वीकार किया और ना ही उसकी माता के परिवार वालों ने । जिसके चलते दोनों समाजों के बीच काफी तनातनी भी हुई । अंततः यह निर्णय लिया गया कि वर्षा के माता-पिता को समाज से बाहर कर दिया जाए । उनसे किसी भी प्रकार का रोटी बेटी का संबंध ना रखा जाए ।

दोनों परिवारों के सभी लोग इस निर्णय से सहमत थे । केवल वर्षा के सबसे बड़े ताऊ, जो वर्षा के पिता से 10 साल बड़े थे , वे ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जो थोड़े खुले दिमाग के थे । वे इस विवाह को जायज मानते थे । लेकिन उनकी स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह गांव की

सामाजिक व्यवस्था को चुनौती दे पाते । इसलिए वह भी मौन रह गए ।

दोनों को गांव से बाहर झोपड़ी बनाकर रहना पड़ा । वर्षा की मां गर्भवती थी । सारे तिरस्कार और बहिष्कार को सहते हुए भी वे अपना संघर्ष करते रहे । इस बीच वर्षा का जन्म हो गया । वर्षा के जन्म के बाद गांव वालों ने उन्हें वापस अपनी बिरादरी में स्वीकार करने के लिए दंड का प्रावधान रखा । जिसके अनुसार गांव वालों को खाना खिलाना पड़ता था । वर्षा के ताऊ ने इसमें भी मदद की । दंड को पूरा करने के बाद वर्षा के माता-पिता को समाज में उठने बैठने की अनुमति मिल गई ।

इस घटना ने दोनों पति-पत्नी के ऊपर बहुत गहरा प्रभाव डाला । उन्होंने इस प्रकार की कठोर सामाजिक व्यवस्था से हटकर शहर में रहने का विचार बनाया । ऐसी परिस्थिति में फिर ताऊजी ने उनकी और मदद का हाथ बढ़ाया । वे दोनों गांव से निकलकर रायपुर आ जाए ।

ताऊ पहले से ही सरकारी नौकरी में थे । ताऊ जी की अपनी कोई संतान नहीं थी । इसलिए वर्षा को अपनी बेटी की तरह मानते थे । वर्षा के बाद उनके घर में फिर और कोई संतान नहीं हुई ।

वर्षा मां-बाप और ताऊ ताई के प्यार और आशीर्वाद के बीच बड़े लाड से पल रही थी । वर्षा के पिताजी को भी एक प्राइवेट कंपनी में नौकरी लग गई थी और सब कुछ बढ़िया चल रहा था ।

जब वर्षा 10 वर्ष की थी । तभी शहर में डेंगू का प्रकोप हुआ । वर्षा के माता-पिता और ताई तीनों डेंगू के शिकार हो गए । सादा बुखार समझकर इलाज चलता रहा और आखिर में स्थिति संभल नहीं पाई ।एक-एक करके तीनों चल बसे....

उसके बाद सिर्फ वर्षा और ताऊ रह गए । दोनों इस घटना के बाद एक दूसरे के लिए जीने की वजह बन गए । वर्षा ने ग्रेजुएशन किया उसके बाद अंग्रेजी में पोस्ट ग्रेजुएशन भी किया वह बचपन से ट्यूशन पढ़ाती थी और अच्छा खासा कमा लेती थी अब ताऊजी भी

रिटायर हो चुके थे कुछ दिनों के बाद वर्षा की नौकरी एक प्राइवेट स्कूल में लग गई ।

वर्षा जिस स्कूल में पढ़ाती थी, उसी स्कूल में रमेश भी था । रमेश के पिता स्कूल के डायरेक्टर थे । इसी प्रतिभा के बल पर वह भी वहां पर आता था । पढ़ाता कम था और व्यवस्था के नाम पर टीचरों के साथ ज्यादा समय गुजारा करता था । डायरेक्टर का बेटा था इसलिए उसे सभी प्रकार की छूट थी ।

वर्षा एक बार लगभग महीने भर के लिए बीमार पड़ी । उसे टाइफाइड हो गया था । वह एक महीने तक स्कूल नहीं जा पाई ।

मैनेजमेंट ने उसकी जगह दूसरा टीचर अप्वॉइंट कर लिया । किसी ने राय दी कि जाकर तुम रमेश से मिल लो ।

मरता क्या न करता वाली स्थिति में वह रमेश से मिलने पहुंची । उसने रमेश को अपने मेडिकल सर्टिफिकेट भी दिखाएं । देखने के बाद रमेश भावुक हो गया और उसने वर्षा को फिर से स्कूल में रख लिया ।

रमेश भी लगभग वर्षा की आयु का था । दोनों के बीच अब स्कूल के अलावा भी बातचीत होने लगी । जैसा की आप लोगों ने भी अनुभव किया होगा की युवावस्था में अन्य विषयों पर बातचीत होते होते वह वापस मूल विषय पर आ ही जाती है ।

प्रेम विवाह

समय के प्रवाह के साथ दोनों परिंदे उड़ान भरते रहे और एक समय ऐसा भी आया जब रमेश ने उसके सामने अपना प्रेम प्रस्ताव रखा । वर्षा तो जैसे तैयार बैठी थी । उसने उसका प्रेम प्रस्ताव सहर्ष स्वीकार किया ।

अब आलिंगन चुंबन जैसी चीजें गुपचुप होने लगी ...

एक दिन एकांत में अवसर मिलने पर रमेश ने आलिंगन से भी आगे बढ़ने का प्रयास किया !

लेकिन ! वर्षा ने उसे रोक दिया !

रमेश ने उसे प्रश्नवाचक निगाहों से देखा !

वर्षा ने स्पष्ट किया कि वह विवाह के पहले इस प्रकार के संबंधों के पक्ष में नहीं है ।

रमेश ने उसे कई प्रकार से समझाने की कोशिश की । आधुनिक समाज का वास्ता दिया । सभी प्रकार के सुरक्षा उपकरणों का उपयोग करने का वादा किया ।

लेकिन ! वर्षा टस से मस नहीं हुई ..

रमेश का प्रयास उस दिन खत्म नहीं हुआ ...

उसने अपना प्रयास लगातार जारी रखा .....

अब वह चुंबन तथा आलिंगन के दौरान उसके शरीर को भी अलग-अलग प्रकार से उत्तेजित करने की कोशिश करता .....

वर्षा भी उसके भाव को समझ रही थी.....

वह उत्तेजित भी हो जाती थी लेकिन उसका आत्म नियंत्रण रमेश के प्रयासों पर भारी पड़ता था.....

छह महीने के प्रयासों के बाद रमेश को लगा कि यहां दाल नहीं गलने वाली है ....

उसने वर्षा को समझाया - देखो मेरे घरवाले तो इतनी जल्दी तुम से विवाह करने के लिए मुझे सहमति नहीं देंगे । अगर तुम सहमत हो तो हम मंदिर में शादी कर लेते हैं । वर्षा भी यह जानती थी क्योंकि वह एक गरीब घर से थी और रमेश खानदानी रईस । उसको प्रस्ताव में कुछ संभावनाएं दिखने लगी ! लेकिन वह एकाएक राजी नहीं हुई !

उसने रमेश से कहा - तुम्हारी बात तो सही है । फिर भी मैं सोच कर तुम्हें बताऊंगी ।

निर्णय आप लोग भी जानते होंगे । युवावस्था और मनपसंद साथी का साहचर्य सभी को प्रिय होता है । उसके लिए प्रयास करने में आनंद की अनुभूति भी होती है ।

वर्षा ने दो-तीन दिन चिंतन किया और अंततः रमेश को अपनी सहमति बता दी ।

रमेश ने अमरकंटक जाने का प्लान बनाया । वर्षा ने अपने घरवालों को बताया कि वह स्कूल के टूर में एक हफ्ते के लिए अमरकंटक जा रही है । घर वालों ने सहमति दे दी और दोनों गुपचुप तरीके से अमरकंटक की तरफ निकल गए । अमरकंटक में पहुंचने के बाद दोनों एक होटल में पहुंचे । वहां एक कमरा बुक किया ।

फ्रेश होने के बाद दोनों मंदिर की ओर निकल पड़े । वहां मंदिर में पहुंचकर उन्होंने पुजारी से अपनी इच्छा बताई । पुजारी ने देखा तो दोनों वयस्क दिखाई दे रहे थे । उसके पास ऐसी जोड़ी आती रहती थी । और मनमाफिक दक्षिणा भी मिल जाती थी । उसने विधि विधान से दोनों का विवाह करवा दिया ।

अब दोनों सभी प्रकार की गतिविधियों के लिए स्वतंत्र थे । रमेश और वर्षा दोनों प्रसन्न थे । तब तक शाम हो चुकी थी । दोनों दोनों ने रास्ते में होटल में खाना खाया और अपने रूम में पहुंच गए ।

रमेश वर्जित फल का स्वाद चखने के लिए आतुर था तो वर्षा में भी उस आतुरता में कोई खास कमी नहीं थी .....

दोनों जल्द से जल्द सब कुछ कर लेना चाहते थे .....

कमरे में पहुंचते ही वर्षा ने देखा कि उनका बिस्तर फूलों से सजा हुआ है .....

शायद रमेश ने होटल वालों को ऐसा करने के लिए कहा होगा.....

पूरी व्यवस्था किसी सुहागरात की तरह की की हुई थी .....

धीरे धीरे दोनों एक दूसरे के करीब आए...

चुम्बन और आलिंगन का दौर चला.....

इस बीच कब कपड़े शरीर से उतर गए....

दोनों को पता नहीं चला .....

उसके बाद देह संघर्ष का दौर चला जो आधी रात के बाद तक जारी रहा....

तीन दिनों तक वह कमरा उन दोनों के यौन संघर्ष का साक्षी बना रहा .....

वर्षा की आंखों में भी संतुष्टि के भाव थे और रमेश को तो जैसे मनचाही मुराद पूरी हो गई थी.....

इस प्रकार से अपना विवाह और यूं कह लीजिए हनीमून भी मना कर वे दोनों वापस रायपुर लौट गए ।

वहां किसी को पता नहीं चला कि इन दोनों ने शादी कर ली है । वर्षा भी गर्भनिरोध के लिए आवश्यक व्यवस्था के साथ आई थी । इसलिए कुछ गड़बड़ नहीं हुई । लगभग छह महीने तक रायपुर में भी उनका गुपचुप मिलन जुलना चलता रहा ।

रमेश का गांव का फार्म हाउस उनकी मिलन स्थली बन गया ।

वर्षा की माता पिता का देहांत हो चुका था और बूढ़े ताऊजी साथ रहते थे । उनकी भी तबियत खराब रहा करती । पेंशन के पैसे उनकी दवाओं में निकल जाते और बाकी खर्च वर्षा की नौकरी और ट्यूशन से चल जाता था ।

अलगाव

छह माह बाद अचानक रमेश ने उससे मेल मुलाकात कम कर दी । शायद उसके घरवालों को पता चल गया हो ।

महीने भर के बाद वह कोलकाता चला गया । वर्षा ने पता लगाने की कोशिश की लेकिन कुछ पता नहीं चल पाया । सिर्फ यही पता चल पाया कि वह कोलकाता गया है ।

काफी खोजबीन के बाद उसे रमेश के कोलकाता का पता मिलता है । उसने अपने ताऊ को सारी बातें बताई । सबसे पहले तो उन्होने उस पर अपना गुस्सा निकाला लेकिन उसकी हालत देख कर उसके साथ कोलकाता जाने के लिए राजी हो गए ।

दोनों रमेश की तलाश में कोलकाता गए थे । दिए गए पते पर रमेश मिल गया ।

लेकिन !

उसने वर्षा को दो टूक शब्दों में कह दिया कि वह उससे आगे संबंध नहीं रख सकता है.....

एक तरह से उसने उस विवाह को ही मानने से मना कर दिया ....

उसने वर्षा को चरित्रहीन तक बता दिया....

यह सब सुनकर ताऊ बर्दाश्त नहीं कर पाए और वह वहीं बेहोश हो गए .....

वर्षा को भी इस प्रकार के व्यवहार की उम्मीद नहीं थी ..

उसका स्वप्न महल धराशाई हो चुका था !

उसके सपनों का राजकुमार उसके महल को ध्वस्त करके बहुत दूर जा चुका था !

इतनी दूर जहां से वह खुद वापस नहीं आना चाहता था ।

वर्षा भी आत्म सम्मानी लड़की थी ।

वह गिड़गिड़ा कर अपने .आत्म सम्मान को खोना नहीं चाहती थी .....

वह ताऊजी को लेकर वापस स्टेशन पर आ गई । लेकिन वहां रुकने का कोई फायदा नहीं था इसलिए वापस जाना उसे ठीक लग रहा था ।

उसकी काली आंखें वापस आंसुओं से भर चुकी थी ।

अपने दुपट्टे से उन आंसुओं को पोंछा और बोली - अब आप बताइए कि किस पर विश्वास करूं ? वह जिसको मैंने अपना सर्वस्व माना ! जिसने मुझसे विवाह रचाया ! जिसको मैंने अपना सब कुछ सौप दिया है ! वह आज मुझे अस्वीकार कर रहा है....

वही पीड़ा उसकी आंखों से झलक रही थी

मैने पूछा - क्या तुमने पुलिस में शिकायत नहीं की ?

वह बोली - पुलिस वाले गरीबों की सुनते कहाँ है ? जब मैं इस बात को लेकर थाने गयी तो उन्होंने मुझसे दो सौ

सवाल पूछ डाले । मुझे ऐसा लगने लगा जैसे आरोपी रमेश नहीं में ही हूं ।

काफी लंबी पूछताछ के बाद पुलिस ने मुझसे कहा - क्या तुम्हारे पास शादी का कोई सबूत है ?

मेरे पास कोई फोटोग्राफ भी नहीं थी । मुझे अंदाजा नहीं था कि मुझे इसकी भी जरुरत पड़ सकती है । मैं तो समझती थी कि रमेश मुझसे विवाह कर लेगा ।

जब सबूतों की बात की गई तो मैंने कहा - मेरे पास कोई फोटोग्राफ भी नहीं है ।

उन्होंने मुझे समझाया कि इसके बिना कुछ भी होने वाला नहीं है । तुम्हारे पास किसी भी चीज का कोई सबूत नहीं है । केस तो हम डाल देंगे लेकिन उससे कुछ भी साबित नहीं हो पाएगा । और तुम केस हार जाओगी ।

मैंने एक वकील से भी राय ली जो कि मेरा दोस्त है । उसने भी मुझसे कहा - जिस प्रकार की बात तुम कह रही हो उसकी कोर्ट में कोई वैल्यू नहीं है । तुम्हारे पास

ना तो शादी का कोई सर्टिफिकेट है और ना ही कोई फोटोग्राफ । तुम शारीरिक शोषण का आरोप तो लगा सकती हो । लेकिन वह भी साबित होना बड़ा मुश्किल होगा । वयस्कों का सहमति से शारीरिक संबंध बनाना अपराध नहीं है ।

वर्षा आगे बोली - उन सब की बात सुनकर मेरा कलेजा मुह को आ गया । मैंने अपनी आखिरी कोशिश के रूप में यहां का पता तलाश किया और उससे बात करने की कोशिश की । लेकिन वह खुद इनकार कर गया है । अब मेरी जिंदगी में कुछ भी बाकी नही रह गया । ऐसी स्थिति है कि मेरे पास आत्महत्या करने के अलावा कोई रास्ता नहीं दिखाई दे रहा है । जिस ताऊ जी ने मुझे पाल पोस कर बडा किया है उनकी देखभाल करने वाला भी कोई नहीं है । उनकी उम्र भी इतनी ज्यादा हो चुकी है कि वे सदमे को शायद ही बर्दाश्त कर पाएं ।

मैंने पूछा - क्या तुमने उसके परिवार वालों से मुलाकात कर इस संबंध में बताया ।

उसने बताया - मैं रमेश की मां से मिली थी उन को मैंने सारी बातें बताई । लेकिन मेरी बात सुनने के बाद उन्होंने मुझे घर से धक्के मार कर निकलवा दिया । स्कूल में मेरी नौकरी भी समाप्त कर दी ।

रमेश की माँ ने कहा - अमीर लड़कों को फसाने की कोशिश बंद कर दो वरना पूरे खानदान को मरवा दूंगी ।

उसके बाद उनके भेजे गुंडे भी दो-तीन बार मेरे घर पर आए जबकि ताऊ जी घर पर नहीं थे । उन्होंने मुझे कई प्रकार से धमकाया । एक बार तो उनमें से एक ने मेरे कपड़े भी फाड़े और मेरे साथ बदसलूकी भी की ।

जाते जाते वे धमकी देकर चले गए - अभी तो सिर्फ कपड़े फाड़े हैं ! अगर तुम शांत नहीं रही ! तो !! इस कपड़े की तरह तुम्हारी इज्जत ही तार तार कर देंगे ।

इतना सब होने के बाद मेरी हिम्मत दुबारा उनके घर जाने की भी नहीं हुई और ना ही पुलिस थाने में जाने की मेरी हिम्मत थी । अपनी आखिरी कोशिश के रूप में रमेश से मिलने गई थी । लेकिन वह भी बेकार रहा ।

मुझे लगा कि ऐसी परिस्थिति में वशीकरण का प्रयोग अवश्य काम करेगा । मुझे चौसठ योगिनी मंदिर में रेणु माइ ने हत्थाजोड़ी पर वशीकरण प्रयोग सिखाया था । उन्होने मुझे उसके विभिन्न प्रयोग भी बताए थे । जिसमें से एक प्रयोग पत्नी को छोड़कर गए हुए पति को वापस लाने का भी था ।

अभी तक मैंने अपने साधक होने की कोई बात नहीं की थी | इसलिए दिक्कत यह थी कि मैं उससे यह बात सीधे बोल नहीं सकता था । मैंने सोचा कि वापस आने पर इस विषय को छेड़ कर देख लूंगा ।

लगभग आधे घंटे के बाद वह वापस लौटी । शायद बाथरूम में जमकर रोई होगी । अब वह थोड़ी शान्त दिखाई दे रही थी । वह आकर बर्थ पर बैठ गई । थोड़ी देर में नाश्ते वाले आने लगे । मैंने समोसे खरीदे और उसने ब्रेड आमलेट । हमने नाश्ता किया और फिर बातों का दौर चल निकला ।

मैंने यूं ही बातों बातों में पूछा - क्या तुमने कभी किसी तांत्रिक से मदद लेने के बारे में सोचा ?

इतना सुनते ही उसकी त्यौरियां चढ़ गई ।
वह बोली - सब कमीने होते हैं ! एक नंबर के धोखेबाज ! खाली पैसे लूटना जानते हैं ! उनके बस का कुछ भी नहीं होता !! ठग विद्या के अलावा यह कुछ भी नहीं है !!!

इतना सुनकर मैं समझ गया कि जरूर इसे किसी तांत्रिक ने बेवकूफ बनाया होगा ।

इसलिए इसकी राय इतनी कड़वी है ।

काफी समय तक फिर शांति रही । मैं उसे ज्यादा कुरेदना नहीं चाहता था ।

थोड़ी देर के बाद वह खुद बोली - क्या आपको इन सब पर विश्वास है ? मुझे तो बिल्कुल नहीं है !

मैं कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था । इसलिए बिल्कुल शांत रहा ।

मैंने यूं ही बातों बातों में पूछा - क्या तुमने कभी किसी तांत्रिक से मदद लेने के बारे में सोचा ?

इतना सुनते ही उसकी त्यौरियां चढ़ गई ।
वह बोली - सब कमीने होते हैं ! एक नंबर के धोखेबाज ! खाली पैसे लूटना जानते हैं ! उनके बस का कुछ भी नहीं होता !! ठग विद्या के अलावा यह कुछ भी नहीं है !!!

इतना सुनकर मैं समझ गया कि जरूर इसे किसी तांत्रिक ने बेवकूफ बनाया होगा ।

इसलिए इसकी राय इतनी कड़वी है ।

काफी समय तक फिर शांति रही । मैं उसे ज्यादा कुरेदना नहीं चाहता था ।

थोड़ी देर के बाद वह खुद बोली - क्या आपको इन सब पर विश्वास है ? मुझे तो बिल्कुल नहीं है !

मैं कुछ बोलने की स्थिति में नहीं था । इसलिए बिल्कुल शांत रहा ।

थोड़ी देर के बाद मैंने पूछा - आपने किस से संपर्क किया था ?

उसने बताया - न्यूज पेपर में एक दिन मैंने देखा कि एक बंगाली बाबा का विज्ञापन छपा था । जिसमें लिखा हुआ था कि हर मर्ज का इलाज 24 घंटे में ! शर्तिया समाधान ! किसी भी प्रकार की समस्या होने पर मंत्र तंत्र के माध्यम से उसका समाधान किया जाता है !!!

मैंने पूछा - क्या वह तुम्हारे शहर का रहनेवाला था ?

उसने बताया - नही ! वह बसंत होटल में कमरा नंबर 304 में ठहरा था । उसने वहीं पर संपर्क करने का समय दिया हुआ था ।

मैंने कहा - मुझे लगता है । जो तांत्रिक अपने शहर का हो उससे ही प्रयोग कराने चाहिए ताकि कुछ गड़बड़ होने पर उसे पकड़ा जा सके । फिर क्या तुम उससे मिलने होटल गई थी ?

उसने कहा - हां मैं उससे मिलने उसके होटल के कमरे में गई थी । वहां पर आठ दस लोग बैठे हुए थे । उनके

समस्या बताने से पहले ही बंगाली बाबा उनकी समस्या स्वयं बता देता था । उसे देख कर मैं बहुत ज्यादा प्रभावित हो गई।

जब मेरी बारी आई तो उसने मुझसे सीधे पूछा - रमेश को वापस लाना है ?

यह सुनकर मेरी आंखें फटी की फटी रह गई । मुझे लगा की यह रमेश के बारे में कैसे जानता है । उसकी यह बात सुनकर मैं इतनी ज्यादा प्रभावित हो गई कि मैंने उसके चरण स्पर्श किए । उसके पांव को पकड़ लिया और बोली - बाबा कैसे भी उसे वापस बुला दो ।

बाबा बोला - तू चिंता मत कर । मैं उसे वापस ले आऊंगा ।

मैंने पूछा - बाबा क्या करना होगा ?

उसने बताया - एक विशेष अनुष्ठान करना होगा । जिसके लिए बीस हजार रुपये लगेंगे ।

मैंने बताया - बाबा ! मैं गरीब घर की हूं । मुझसे इतना पैसे का इंतजाम तो नहीं हो पाएगा ।

इस पर बाबा बोला - बच्चा ! बिना पैसे के तो काम नहीं होगा । मेरी गारंटी है कि वह 24 घंटे में तेरे दरवाजे पर खड़ा होगा ।

मैंने पूछा - आप यह पूजा कब करोगे ?

उस दिन रविवार था । उसने बताया - अगली शुक्रवार को पूजन होगा और शनिवार की रात या रविवार की दोपहर तक वह तेरे पास आ जाएगा ।

मैंने उससे कहा - बाबा । मेरे पास पैसे तो नहीं है लेकिन यह आधे तोले की सोने की अंगूठी है । इसको आप रख लो । लेकिन मेरा अनुष्ठान कर दो ।

काफी ना नुकुर के बाद वह मान गया ।

उसने कहा - शुक्रवार को शाम को तुझे एक बार और आना पड़ेगा ।

मैंने कहा - ठीक है ।

मैं अपनी अंगूठी उसे दे कर घर वापस आ गई ।

शुक्रवार की शाम को जब मैं वहां पहुंची तो उसने जमीन पर बड़ा लंबा चौड़ा माया जाल फैला रखा था ।

अजीब अजीब तरह के यंत्र और अजीब अजीब सी चीजें रखी हुई थी ।

एक हरे रंग का रेशमी चादर बिछा हुआ था ।

उस चादर के ऊपर एक यंत्र बना था ।

जिसके बीच मे नौ खाने बने हुए थे ।

जिसके ऊपर कुछ अंक लिखे हुए थे ।

तीन खानों में खोपड़ियां रखी थी ।

चार खानों में लगभग लगभग एक फुट लम्बी हड्डियां रखी थी ।

दो खाने खाली थे.....

बाबा एक चमड़े के आसन पर बैठा था । उसके ठीक सामने एक और आसन रखा हुआ था । मेरे से पहले पन्द्रह बीस लोग बैठे हुए थे । यह वही लोग थे जो उस दिन भी आए थे ।

उसने हम सब को बारी-बारी से अपने सामने वाले आसन पर बिठाया । कुछ मंत्र बोलकर अपना अपना काम बोलने के लिए कहा ।

इस दौरान कमरे में गूगल और लोबान की धूप जल रही थी । बेहद रहस्यमय वातावरण था ।

हम सभी ने एक-एक करके अपना अपना काम बोला और अपने हाथ में रखा हुआ फूल उस यंत्र के बीच में डाल दिया ।

उसके बाद सारे लोगों को यंत्र के चारों ओर गोल घेरे में बिठाकर बाबा ने एक एक करके पहले उन हड्डियों से सबके सिर को स्पर्श किया ।

उसके बाद उन्हें पास रखे एक डब्बे में डाल दिया ।

अब उसने एक खोपड़ी उठाई और अजीब ढंग से नाचने लगा ।

लगभग पांच मिनट नाचने के बाद उस खोपड़ी को उसने हवा में उठाया ।

हवा में उठते ही उसकी आँखों के छेद में से आग की लपटें निकली और दो सेकंड के बाद बुझ गयी । जितने लोग बैठे थे वे यह चमत्कार देख अचंभित बैठे थे .....

उसी प्रकार उसने तीनों खोपड़ियों के साथ किया । तब तक सारे लोगों को ऐसा लगने लगा था कि उनका काम तो अब हो ही जायेगा .....

उसके बाद बाबा ने कहा - अब आप लोग जाओ मेरा पूजन मैं चालू करूंगा । जो रात भर चलेगा । अगले चौबीस घंटे में तुम सब का काम हो जाएगा ।

हम लोग कुल मिलाकर बीस के आसपास लोग रहे होंगे । सभी बंगाली बाबा को प्रणाम करके कमरे से बाहर निकल गए । मैं भी बाहर निकल आई और घर जाकर प्रतीक्षा करने लगी कि अगले दिन रमेश की खबर

मिलेगी । वह रात आशा और संभावना की अधिकता से नींद नही आई ।

शनिवार का दिन बीत गया.....

कोई खबर नहीं आई.....

शाम होते-होते थोड़ी थोड़ी निराशा होने लगी .....

फिर भी उम्मीद थी कि रविवार दोपहर तक का समय तो है .....

रविवार पूरा निकल गया लेकिन कोई खबर नहीं आई .....

तो मैंने सोचा कि वापस एक बार बाबा से संपर्क किया जाए ।

जब फोन लगाया तो फोन स्विच ऑफ बता रहा था ।

यह देख कर मेरा माथा ठनका । मैं तुरंत बसंत लॉज की तरफ गई । वहां जाकर मैंने रिसेप्शन में बंगाली बाबा

मिलेगी । वह रात आशा और संभावना की अधिकता से नींद नही आई ।

शनिवार का दिन बीत गया.....

कोई खबर नहीं आई.....

शाम होते-होते थोड़ी थोड़ी निराशा होने लगी .....

फिर भी उम्मीद थी कि रविवार दोपहर तक का समय तो है .....

रविवार पूरा निकल गया लेकिन कोई खबर नहीं आई .....

तो मैंने सोचा कि वापस एक बार बाबा से संपर्क किया जाए ।

जब फोन लगाया तो फोन स्विच ऑफ बता रहा था ।

यह देख कर मेरा माथा ठनका । मैं तुरंत बसंत लॉज की तरफ गई । वहां जाकर मैंने रिसेप्शन में बंगाली बाबा

से मिलने की इच्छा बताई । उन्होंने बताया कि वह तो शनिवार को सुबह ही चेक आउट कर गए हैं ।

मैं अपना माथा पकड़ कर वहीं बैठ गई । बाबा मुझे बेवकूफ बना गया था और सोने की मेरी अंगूठी जो मेरी मां की आखिरी निशानी थी वह भी अपने साथ ले गया था ।

अब आप बताओ कि तांत्रिकों पर कैसे विश्वास किया जाए ?

उसकी कहानी सुनने के बाद मेरे पास भी कोई शब्द नहीं थे । मैं खामोशी से उसकी बात सुनता रहा.....

मैंने कहा - दूसरे शहर से आने वाले यह बाबा आमतौर पर ठग ही होते हैं । वह हफ्ते 2 हफ्ते के लिए अपना जाल फैला कर लोगों से जितना पैसा हो सके लूट लेते हैं और गायब हो जाते हैं । क्या रायपुर में कोई तांत्रिक नहीं है ?

उसने कहा - मेरी जानकारी में तो कोई नहीं है । इस घटना के बाद मेरा तांत्रिकों से विश्वास उठ गया है

। इसलिए अब मैं कभी किसी तांत्रिक के पास नहीं जाऊंगी ।

मैंने कहा - ठीक है !

फिर हम दोनों शांति से बैठ गए...

तब तक ताऊजी भी अपनी नींद पूरी कर चुके थे । वह भी नीचे उतरे । जिसके बाद हम तीनों ने चाय पी । उसके बाद हम दोनों ने वर्षा को ऊपर सो जाने के लिए कहा । काफी ना नुकुर के बाद वह ऊपर जाकर सो गई ।

अब हम दोनों के बीच बातचीत का दौर चलने लगा । राजनीति दुनियादारी क्रिकेट आदि आदि से घूमता हुआ चर्चा का दौर चलता रहा । वैसे ही शाम हो गई रायपुर आने वाला था । दोनों वहां पर उतर गए और मैं भी रात तक दुर्ग पहुंच गया ।

मेरा विचार तो था कि सीखे हुए वशीकरण प्रयोग का रिजल्ट देख लेता, लेकिन मैं भी संकोच में बिना कुछ कहे रह गया ।

बंगाली बाबा के साथ हुए अनुभव के चलते उसकी तांत्रिकों के प्रति वितृष्णा भी संभवतः मेरे संकोच का कारण रही होगी ।

दुबारा मुलाक़ात

वापस आने के बाद मैं दैनिक कार्य में लग गया और वर्षा के बारे में भूल गया । जब मैं ऑफिस में बैठा था तभी एक परिचित बृजभूषण शर्मा जी, जो कि एक बार मुझसे सहायता ले चुके थे, उनका फोन आया । उन्होंने बताया कि उनके परिचित हैं जिनकी समस्या का समाधान करने के लिए वे अपने साथ लाना चाहते हैं ।

शर्माजी मेरे अच्छे मित्र थे । मैंने उन्हें शाम को आने के लिए समय दे दिया । कार्यालय का काम निपटा कर जब 5:30 बजे कार्यालय से निकला तभी उनका फोन आया कि वे लोग आ चुके हैं । उनका घर रास्ते में ही पडता था ।

मैंने कहा - अगर वह तुम्हारे घर में है तो मैं वहीं आ जाता हूं । अदरक वाली चाय पिलानी पड़ेगी । उन्होंने हँसकर हामी भरी ।

कार्यालय का काम काफी थका देने वाला होता है । एक ही प्रकार के काम को रोज-रोज करना पड़ता है । खासतौर से बाबू गिरी का काम, जिसे क्लर्क कहा जाता है । वह बड़ा नीरस किस्म का होता है । इसलिए शाम को एक कप चाय मिल जाए, वह भी अपनी पसंद की, तो मन फिर से ताजा हो जाता है ।

मुझे अदरक वाली चाय बहुत पसंद है । मेरी पत्नी माला जबरदस्त अदरक की चाय बनाती थी । उसके जाने के बाद वैसी चाय के लिए मैं तरस गया था । आपने भी महसूस किया होगा कि कई लोगों के हाथ में जादू होता है । उनकी हाथों से बनी हुई चीजों का स्वाद भी अद्भुत होता है । इसे भगवत कृपा कहिए या अन्नपूर्णा का आशीर्वाद ! मेरी पत्नी माला जो भी चीज बनाती ! वह बहुत स्वादिष्ट बनाती थी ! यहां तक कि उसके हाथों से बनी हुई पूड़ियों का स्वाद भी बाकी पूड़ियों से अलग हुआ करता था ! उसकी बात ही अलग थी ! मुझे उसकी कमी हमेशा खलती है .....

जीवन ऐसा ही है ! जो मिला था उसको सोचते रहकर आप दुखी हो सकते हैं लेकिन उससे जीवन आगे नहीं

बढ़ेगा ! वास्तविकता को स्वीकार करते हुए आगे बढ़ते रहने का नाम ही जीवन है ! यादें आसानी से छूटती नहीं है लेकिन यादों में खोए रहने से जीवन चलता भी नहीं है.....

खैर....

शर्मा जी के घर जब मैं पहुंचा, तो शाम के लगभग 6:30 बज चुके थे । वह मुझे दरवाजे पर ही मिल गए और मुझे अपने साथ अपनी बैठक तक ले गए ।

मैंने देखा कि अंदर एक बुजुर्ग व्यक्ति बैठे हुए हैं । शर्मा जी ने मेरा परिचय उनसे करवाया ।

उन्हें देखकर मैं मुस्कुरा पड़ा ! क्योंकि वह वर्षा के ताऊजी थे ।

मैंने शर्मा जी को कहा - मैं इनको जानता हूं । ट्रेन में सफर के दौरान इनसे मुलाकात हो चुकी है ।

उसके बाद चाय का दौर चला । ताऊ जी की उम्र शर्मा जी से काफी ज्यादा थी, फिर परिचय कैसे हुआ ? यह सवाल मेरे दिमाग में घूम रहा था ।

तभी उन्होंने बात को स्पष्ट किया । उनकी पत्नी और वर्षा एक ही क्लास में पढ़ते थे । उसका मायका रायपुर में था । जब वह रायपुर गई थी तो वर्षा से उसकी बात हुई थी । उसने अपनी समस्या बताई तब उन्होंने अपनी बात बता कर मुझसे मिलने के लिए कहा । उसी सिलसिले में दोनों उनके घर में आए हुए थे । मुझे देखकर ताऊजी प्रसन्न हो गए । उन्होंने वर्षा को आवाज दी । वर्षा भी बाहर निकल कर आई ।

जैसे ही उसने मुझे देखा तो वह बोली - अरे आप ।

मैं मुस्कुराया ।

वर्षा ने पूछा - आप तांत्रिक हैं ?

मैंने सहमति में सर हिलाया ।

वह बोली - आपने उस दिन तो कुछ नहीं कहा ।

मैंने कहा - आप तांत्रिकों को इतनी सारी गालियां दे रही थी कि, मैंने सोचा कि मैं अगर कुछ बताऊंगा तो कहीं आप मेरी पिटाई ही ना कर दें ।

सारे लोग हंस पड़े । थोड़ी देर में माहौल हल्का हो गया ।

कुल मिलाकर रमेश को वापस बुलाने के लिए प्रयास किया जाना है यह तय हुआ ।

वर्षा ने मुझसे सीधे पूछ लिया - क्या आप वास्तव में तंत्र क्रियाओं के माध्यम से रमेश को वापस बुला सकते हैं ?

मैंने कहा - यह संभव है ! उसने तुम्हारे साथ विवाह किया है , इसलिए इसकी नैतिक जिम्मेदारी है कि वह तुम्हें स्वीकार करें ।

उसने फिर सवाल किया -क्या सचमुच ऐसा संभव है ?
मैं बोला - तंत्र साधना तब ज्यादा असर करती हैं,
जब उन्हें उचित कार्यों के लिए प्रयुक्त किया जाए ।
तन्त्र क्रियाओं के पीछे देवी शक्तियां काम करती हैं ।

वह साधक को तब ज्यादा सफल बनाती हैं जब वह इन शक्तियों का प्रयोग उचित कार्यों के लिए करें । साधनाओं का फल तब ज्यादा मिलता है जबकि पीड़ित व्यक्ति स्वयं साधना कर रहा हो । इसकी वजह यह है कि जब पीड़ित व्यक्ति स्वयं साधना करता है तो मंत्र जाप करते समय उसकी भावना अपनी पीड़ा या समस्या के समाधान के लिए इष्ट की कृपा प्राप्त करना होती है । इसकी प्रबलता जितनी ज्यादा होगी उतनी जल्दी लाभ भी प्राप्त होता है ।

जहां तक इसमें गारंटी की बात है वह नहीं होती ।
समस्या का समाधान इष्ट देवता को देना होता है और किसी देवता की गारंटी कोई मनुष्य नहीं ले सकता !
उसकी इतनी औकात है ही नहीं !
अगर आप देखे तो एक मनुष्य की गारंटी दूसरा मनुष्य नहीं दे सकता कि वह कब क्या करेगा ?
तो एक देवता तो बहुत ऊंची चीज है ।

हां आमतौर पर अगर सब कुछ उचित हो तो कार्य सिद्धि हो जाती है । इसलिए अगर आप गारंटी के साथ वापस

ले आने की बात कहेंगे तो मैं साधना करूंगी , तो मैं क्षमा चाहूंगा ।
मैं ऐसी कोई गारंटी नहीं ले सकता ।
शास्त्रीय विधान है । तंत्र की विधियां है । वह मैं आपको बता सकता हूं ।

बाकी प्रभु की इच्छा .....

थोड़ी असमंजस और निराशा के बाद उसने कहा - ठीक है । आप बताएं कि मुझे क्या करना होगा।

मैंने कहा- मैं तुम्हें इसके लिए एक मंत्र बताऊंगा ।
जिसका 15 दिन तक तुम्हें जाप करना होगा ।

उसने कहा - मैंने तो कभी मंत्र जाप नहीं किया है । क्या मैं यह कर पाऊंगी ?

मैंने कहा - मंत्र जाप कोई रॉकेट साइंस नहीं है ! जिसके लिए बहुत ज्यादा पूर्व अनुभव की जरूरत हो ! मूल रूप से यह संबंधित देवी या देवता को प्रसन्न करने के लिए उपयुक्त शब्दों या बीज अक्षरों का एक समूह होता है ! जिसके उच्चारण से उत्पन्न होने वाली तरंगें और साधक

का भाव दोनों मिलकर उस देवी या देवता को अपने अनुकूल बनाता है !

जिसके चलते ऐसी परिस्थितियां बनती हैं जो हमारे कार्य को सिद्ध करती है !

तुम्हें भी मंत्र जाप के दौरान अपने मन में शुद्ध रूप से इस भावना को रखना है कि मेरा पति मेरे पास वापस लौट आए !

मुझे स्वीकार करें !

जितनी तीव्र तुम्हारी भावना होगी ! उतनी ज्यादा संभावना है कि वह तुम्हारे पास वापस लौट आए !

वर्षा का अगला सवाल - मंत्रों का उच्चारण गलत हो गया तो ?

मैं मुस्कुराया - आप पढ़ी-लिखी महिला हैं । मुझे नहीं लगता कि मंत्रों का उच्चारण आपसे गलत होगा । शुरुआत में थोड़ी दिक्कत हो सकती है क्योंकि हम लोग आमतौर पर संस्कृत भाषा का उपयोग नहीं करते हैं ।

इस वजह से संस्कृत भाषा में लिखे हुए मंत्रों को पढ़ने में थोड़ी जटिलता लगती है । जब आप कई बार उसी मंत्र को पढ़ेंगे तो धीरे-धीरे उच्चारण भी स्पष्ट हो जाता है और आत्मविश्वास भी आ जाता है ।

वर्षा ने मुझसे पूछा - क्या आप यह काम नहीं कर सकते ?

मैंने कहा - हो सकता है । मैं भी यह कार्य कर सकता हूं । सफलता की संभावना वैसी ही होगी जैसी अगर तुम करती तो होता । लेकिन मेरे मंत्र जाप करने और तुम्हारे मंत्र जाप करने में थोड़ा सा फर्क होगा । यह तो तुम भी जानती हो कि तुम्हारा काम तभी हो सकता है, जब तुम दोनों के बीच में आकर्षण और सम्मोहन हो ! दोनों एक दूसरे को चाहते हो ! दोनों एक दूसरे के साथ रहना चाहते हो ! तभी दांपत्य जीवन चल सकता है । इसके लिए जरूरी है कि तुम स्वयं साधना करो । तुम स्वयं अपने अंदर ऐसा आकर्षण पैदा करो । जो उसे प्रभावित करें । जो उसे तुम्हारे करीब आने के लिए मजबूर करें । इष्ट देवताओं की ऐसी कृपा हो, जो तुम दोनों को एक करने के लिए अनुकूलता प्रदान करें । यह तभी संभव

है जब तुम स्वयं साधना करो । तुम स्वयं मंत्र जाप करो ....

यह सुनकर उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव उभरे । उसने मंत्र जाप करने पर सहमति जताई ।

यह साधना देवी काली की साधना थी ।

भगवती काली का स्वरूप बेहद उग्र दिखाई देता है । इसलिए उन्हें भयंकर देवी माना जाता है। लेकिन मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं कि उनके जैसा मातृत्व ! उनके जैसा वात्सल्य ! उनके जैसी कृपा ! उनके जैसी करुणा ! किसी अन्य देवी या देवता में नहीं है । अगर आप हृदय से महाकाली को अपना इष्ट मानते हुए मंत्र जाप करते हैं । साधनाएं करते हैं । या जो आपसे बन पड़ता है वह करते हैं , तो आपको उनकी कृपा सहज ही प्राप्त हो जाती है । वह भोले बाबा की तरह ही सरल सहज और औघड दानी है....

मैंने उसे पूरा विधान बताया और मंत्र जाप की विधि मंत्र सहित बताइ । जिसका मंत्र जाप रात को 10:30 बजे

से प्रारंभ करके 1:30 बजे तक करना था । अर्थात नित्य रात्रि 3 घंटे तक मंत्र जाप करना था ।

इस दौरान चमेली के तेल का दीपक भी लगाना था ।

वर्षा ने सहमति जताई । मैंने एक कागज पर मंत्र तथा साधना विधि लिख कर दे दी ।

वह उसे लेकर कमरे के अंदर चली गई । वहां शायद भाभी जी से उसकी कोई बात हुई होगी ।

यह तय हुआ कि वह 15 दिन शर्मा जी के यहां रह कर उस साधना को पूरा करेगी । शर्मा जी का घर काफी बड़ा था । किसी प्रकार की दिक्कत होने पर वह मुझसे संपर्क भी कर सकती थी । उस दिन त्रयोदशी थी । दो दिन के बाद अमावस्या आने वाली थी । मैंने उसे सुझाव दिया कि वह अमावस्या की रात्रि से इस साधना को शुरू करें जिससे शुक्ल पक्ष की चौदस तक वह साधना पूर्ण हो जाती ।

उसके बाद पूर्णिमा के दिन साधना की पूर्णाहुति और हवन कर दिया जाता । इस बात पर सहमति बन गई ।

वर्षा ने उसी रात से मंत्र जाप चालू कर दिया । मैंने उसके साधना कक्ष में कलश की स्थापना तथा अन्य पूजन करवाया । रात लगभग दस बजे मैं वापस लौट आया ।

वर्षा रात 10:30 बजे से मंत्र जाप करने बैठी । नित्य उसका मंत्र जाप 1:30 बजे तक चलता । यह क्रम 3 दिनों तक सामान्य रूप से चलता रहा । कुछ भी विशेष घटित नहीं हुआ ।

चौथे दिन सवेरे सवेरे शर्मा जी का फोन आया । वह काफी हड़बड़ाए हुए थे ।

मैंने पूछा - क्या हुआ ?

उन्होंने बताया - वर्षा बुखार में तप रही है ।

मुझे पता था कि साधना के दौरान इस प्रकार की स्थितियां आती है । मंत्र जाप अगर बढ़ जाए तो शरीर में तापमान बढ़ता है । कई बार बुखार जैसा महसूस होता है । लेकिन सामान्य बुखार और इस प्रकार के बुखार में फर्क रहता है । बुखार होने पर शरीर में कमजोरी महसूस

होती है , परंतु साधना वाले बुखार में शरीर की ऊर्जा बढ़ी हुई महसूस होती है ।

शर्मा जी घबराए हुए थे । इसलिए मुझे लगा जाकर देख लेना चाहिए । एक बात और थी , मैंने वर्षा को अपने अनुभव किसी और को बताने से मना किया था । जब आप अपने साधनात्मक अनुभव दूसरे को बताने लगते हैं तो आमतौर पर साधना की उर्जा और अनुभव दोनों का क्षय होने लगता है ।

अब आपके मन में यह सवाल भी आ सकता है कि फिर मैं यह सारी बातें क्यों बता रहा हूं ?

यह एक अच्छा प्रश्न है । इसका उत्तर यह है कि इस ज्ञान को समाज के सामने रखने का निर्देश मेरे गुरु ने दिया था । इसलिए मैं जो कर रहा हूं वह गुरु आज्ञा के अंतर्गत आता है और इससे अगर नुकसान भी होगा तो वह भी स्वीकार करते हुए मुझे गुरु आदेश का पालन करना ही है । मैं उसी कार्य में लगा हुआ हूं .....

खैर .....

शर्मा जी के यहां पहुंचकर मैंने देखा कि वर्षा बिस्तर पर लेटी हुई है । भाभी जी उसके सर पर ठंडे पानी की पट्टियां लगा रही है । शर्मा जी चिंतित अवस्था में मुझे लेकर उनके पास पहुंचे ।

वर्षा के चेहरे पर डर का भाव स्पष्ट दिखाई दे रहा था । जिसे देखकर मैं समझ गया कि संभवतः इसे किसी प्रकार का आभास साधना काल के दौरान हुआ था । उसी के चलते यह डर रही है ।

मैंने उससे पूछा - क्या हुआ ?

उसने डरते डरते बताया - कल रात के लगभग 1:30 बजे तक मेरा मंत्र जाप चलता रहा । उसके बाद जब मैं आसन से उठकर अपने बिस्तर पर लेटने जा रही थी तभी एक विशाल काले रंग की आकृति के दर्शन हुए । वह आकृति महाकाली के श्मशान वाले स्वरूप जैसी दिख रही थी । जिसे देखकर मैं बेहद डर गई । उसके बाद का मुझे कुछ याद नही आ रहा , संभवत: बेहोश हो गई ।

मैं जोर से हंस पड़ा । मैंने कहा - तू माई को देख कर बेहोश हो गई । अरे वह तो तुझे कार्य सिद्धि का

आशीर्वाद देने आई होगी । तुझे तो चरण पकड़ लेने थे । और तू बेहोश हो गई । ऐसे में कैसे चलेगा ? चल नाश्ता कर ।

मेरी बात सुनकर वर्षा को ढांढस बंधा । वह उत्साहित हो गई और उसके बाद हमने मिलकर नाश्ता किया । मैं और शर्मा जी ऑफिस की ओर रवाना हो गये ।

रमेश की वापसी

छठवें दिन शाम को मुझे भाभी जी का फोन आया और उन्होंने तुरंत घर आने के लिए कहा । शाम का समय था । मैं ऑफिस से आकर चारपाई पर लंबा हुआ था । तुरंत तैयार होकर उनके घर पहुंचा ।

मैंने देखा सबके चेहरे पर छह छह इंच की मुस्कुराहट फैली हुई है । मेरे आते ही बड़ी गर्मजोशी के साथ मेरा स्वागत किया गया । टेबल पर नाश्ते और मिठाई की थालियां सज गई थी ।

भाभी बोली- रमेश का फोन आया था ।

मैंने वर्षा को पूछा - तुमने उठाया तो नहीं ?

वर्षा ने कहा - आप ने मना किया था इसलिए मैंने नहीं उठाया ।

मैंने कहा - बिल्कुल सही किया । 15 दिन की साधना के बीच में चाहे जितनी बार फोन आ जाए तुमको फोन नहीं उठाना है । इस बात का ध्यान रखना |

उसके बाद नाश्ते और गप्प का दौर चला । फिर मैं वापस घर आ गया । मुझे प्रसन्नता हो रही थी । मैंने हृदय से रेणु माई का धन्यवाद भी किया कि उन्होंने कृपा

पूर्वक जो मंत्र जाप की विधि मुझे बताई थी वह विधि सफल रही । एक पीड़ित व्यक्ति को अनुकूलता प्राप्त हो रही है ।

कई प्रकार के अनुभव से होते हुए वर्षा की वह 15 दिनों की साधना पूर्ण हुई । इस बीच में 20 25 बार रमेश का मिस कॉल आ चुका था ।

पूर्णिमा की रात्रि को हम लोगों ने मिलकर पूर्णाहुति शर्मा जी के घर पर संपन्न की ।

मैंने वर्षा को कहा -अगर कल फोन आए तो बात कर लेना ।

अगले दिन 1:30 बजे रमेश का फोन फिर से आया ।
अबकी बार वर्षा ने फोन उठा लिया ।
फोन उठाते ही रमेश उसपर चिल्ला पड़ा - कितने दिन से तुमको फोन लगा रहा हूं तुम क्यों नहीं उठाती हो ?

वह कुछ नहीं बोली ।

रमेश ने उसे बहुत सारी बातें सुनाई और बोला - तुम कहां हो ?

वर्षा ने बताया - मैं अभी दुर्ग में हूं ।

रमेश - अपना पता बताओ । मैं एक घंटे में आ रहा हूं । वर्षा ने अपना पता बता दिया । मुझे भी खबर दी गई और मैं और शर्मा जी भी घर पहुंच गए ।

मैंने उन सब को कहा - कोई भी पुरानी बातों को लेकर उससे कुछ भी नहीं कहेगा । इस बात का ध्यान रखना एक नई शुरुआत है । उसे सुखद और सहज ढंग से आगे चलने देना । गड़े मुर्दों को उखाड़ने का अब कोई मतलब नहीं है । अब जब परिस्थितियां अनुकूल हो रही हैं तो इसे एक नई शुरुआत समझकर प्रारंभ करना है ।

दोपहर के तीन बजे रमेश शर्मा जी के घर के सामने खड़ा था .....

तंत्र साधना यदि पूरे भाव से की जाए तो संबंधित देवी या देवता अनुकूलता प्रदान करते ही हैं । कई बार यह

अनुकूलता पूर्ण रूप से प्राप्त होती है और कई बार आंशिक रूप से प्राप्त हो पाती है .....

इस केस में दोनों ही एक दूसरे के प्रति आसक्त थे । लेकिन परिवार के दबाव में रमेश कोलकाता चला गया था । साधना की वजह से उसके अंदर में फिर से वर्षा के प्रति लगाव पैदा हो गया और वह वापस उसे लेने आ गया ।

उसने बताया - मैंने तुम्हें भुलाने की बहुत कोशिश की । लेकिन नहीं हो पाया । पिछले 10 -15 दिनों से मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैंने अपने जीवन का सबसे बड़ा अपराध कर लिया हो । मुझे अपने आप से घृणा होने लगी कि मैंने अपनी विवाहिता पत्नी को बेवजह छोड़ दिया । मुझे इतनी आत्मग्लानि होने लगी कि एक बार तो मैंने आत्महत्या तक करने की सोच ली थी । जब तुम फोन नहीं उठा रही थी तो मैं और ज्यादा घबरा गया । लेकिन तुम्हें ठीक देखकर मुझे अच्छा लगा ।

मैंने दोनों प्रेमियों को अकेला छोड़ने का इशारा किया वर्षा उसे लेकर अपने कमरे में चली गई वहां दोनों ने एक दूसरे से गिले-शिकवे किए ।

वर्षा से बात करके उसने वापस अपनाने की इच्छा जाहिर की और महीने भर के बाद एक सादे समारोह में रायपुर में दोनों की शादी संपन्न हो गई । इस पूरे प्रकरण में सबसे बढ़िया बात यह रही कि साधना के प्रभाव से रमेश के परिवार वाले भी अनुकूल हो गए और जब उसने वर्षा से ही शादी करने की बात रखी तो उन्होंने थोड़ी सी ना नुकुर के बाद उसे स्वीकार कर लिया । जिसके चलते दोनों का विवाह फिर से संपन्न हो पाया ।साल भर के भीतर उनके घर एक नन्ही बिटिया का जन्म हुआ । जिसका नाम उन्होंने दुर्गा रखा । भगवती की कृपा से अब उनके यहां सब कुछ कुशल मंगल है ....

॥ श्री गुरु चरणार्पणम ॥

अनिल शेखर "अमस"

अन्य रचनाएँ :-

1. तांत्रिक अघोरानंद ।

2. अघोरानंद की अप्सरा ।

3. अघोरानंद और बलात्कारी प्रेत ।

4. अघोरानंद और तारापीठ की छाया ।

5. अघोरानंद और चौंसठ योगिनी मंदिर का रहस्य ।

6. अघोरानंद और छाया की माया ।

7. अघोरानंद और कमीना प्रेमी ।

8. अघोरानंद और महमारण प्रपंच ।

9. परेतिन की शादी ।